41st AIIMS Annual Convocation
12th September, 2013
Director's Speech

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

All India Institute of Medical Sciences
New Delhi

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान
अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

All India Institute of Medical Sciences
Ansari Nagar, New Delhi-110029

प्रो. आर.सी. डेका, निदेशक
PROF. R.C. DEKA DIRECTOR

माननीय महोदया, डॉ. मारग्रेट चान, महानिदेशक, विश्व स्वास्थ्य संगठन (वि.स्वा.सं.), आदरणीय एम्स अध्यक्ष महोदय तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री गुलाम नबी आजाद, माननीय सांसदगण, विदेशी दूतावासों से पधारे माननीय अतिथिगण, संस्थान के सम्मानित सदस्यगण, प्रतिष्ठित अतिथिगण, मेरे सम्मानित सहयोगीगण - उप-संकायाध्यक्ष, कुल-सचिव एवं संकाय- सदस्यगण, प्रिय छात्रों, आदरणीय अभिभावकगण, प्रेस के सदस्यगण, देवियों एवं सज्जनों:

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के 41वें वार्षिक दीक्षांत समारोह के अवसर पर मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ।

सरकार द्वारा वर्ष 1956 में संसद के एक अधिनियम द्वारा स्थापित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ने अपने 57 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। मैं बहुत ही गर्व से कहना चाहूंगा कि संस्थान ने आयुर्विज्ञान शिक्षा, अनुसंधान तथा गुणवत्ता आधारित रोगी उपचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और इसके द्वारा स्वास्थ्य व्यावसायिक शिक्षा तथा जैव आयुर्विज्ञान अनुसंधान में न केवल अपना नेतृत्व प्रदान किया गया है बल्कि इसने सर्वश्रेष्ठ सेवा प्रदाता के रूप में स्वयं को स्थापित भी किया है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में 10,000 से अधिक लोग कार्यरत हैं जिसमें 750 से अधिक संकाय सदस्यगण, बड़ी संख्या में रेजीडेन्ट डॉक्टर, नर्सें, परा-चिकित्सा स्टाफ, वैज्ञानिक, गैर-चिकित्सीय अधिकारीगण तथा स्टाफ सदस्यगण सम्मिलित हैं।

संस्थान द्वारा अब तक सम्बद्ध स्वास्थ्य एवं आधारभूत विज्ञान के क्षेत्रों में कुल 5198 विशेषज्ञों (एम.डी./एम.एस./एम.डी.एस./एम.एच.ए.-176/2013), 1344 अति विशिष्टता विशेषज्ञों (डी.एम./ एम.सी.एच.-85/2013), 2646 एम.बी.बी.एस. डॉक्टरों (50/2013), 996 पी-एच.डी. (52/2013) तथा 764 स्नातकोत्तरों (एम.एस-सी. एवं एम. बायोटेक: 46/2013) को तैयार किया गया है। संस्थान द्वारा 109 बी.एस-सी. (ऑनर्स) स्तर के व्यक्तियों सहित 2565 नर्सों एवं परा-चिकित्सा कर्मियों को भी प्रशिक्षित किया गया है।

निस्संदेह इन आंकड़ों में विभिन्न विषयों एवं आयुर्विज्ञान तथा सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान की शाखाओं में आज प्रदान की गई 509 उपाधियां भी सम्मिलित हैं।

आज खुशी और जश्न का दिन है। इस अवसर पर, मैं अपनी-अपनी उपाधियों, पदकों तथा शैक्षिक विशिष्टता प्रमाणपत्रों को प्राप्त करने वाले सभी छात्र-छात्राओं को बधाई देता हूँ। मैं उनसे यह भी अपील करना चाहूंगा

कि वे हमेशा अपने संस्थान तथा मातृभूमि की मान-मर्यादा को बनाए रखें।

संस्थान, एम्स में क्रमिक आयुर्विज्ञान शिक्षा कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं तथा सम्मेलनों को आयोजित करके तथा भारत एवं विदेशों में इनमें भाग लेकर अपने ज्ञान एवं विशेषज्ञता को परस्पर आदान-प्रदान करने में भी सक्रिय रहा है। वर्ष के दौरान हमारे संकाय सदस्यों तथा वैज्ञानिकों द्वारा दिया गया वैज्ञानिक योगदान प्रशंसनीय है।

अल्पकालीन प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत, संस्थान द्वारा 38 वि.स्वा.सं. फैलो सहित बड़ी संख्या में विदेशी नागरिकों को स्नातकोत्तर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। वर्ष के दौरान, अ.भा.आ.सं. में 33 विदेशी स्नातकों को भी ऐच्छिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। वर्ष के दौरान भारत के विभिन्न राज्यों से 726 चिकित्सकों और अन्य स्वास्थ्य उपचार कर्मियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

इस वर्ष संस्थान में नए एम.बी.बी.एस. छात्रों हेतु उनमें विश्वास एवं वरिष्ठ छात्रों के साथ आपसी संवाद तथा सहयोग को बढ़ाने के साथ-साथ विभिन्न कार्य-स्थलों के बारे में सीखने के लिए एक स्वयं संवर्धित कार्यक्रम आयोजित किया गया। नए रेजीडेन्ट डॉक्टरों तथा सहायक आचार्यों को उनके लाभ के लिए संचार एवं सुलभ कौशल अर्जन सहित अनुसंधान तथा रोगी उपचार में एक विशिष्ट रूप से डिजाईन किया गया अभिमुखी कार्यक्रम भी प्रस्तावित किया गया। संस्थान में रोगी उपचार क्षेत्रों में अन्य कर्मियों के कार्य निष्पादन को उन्नत करने के लिए उन्हें नियमित आधार पर अभिमुखी कार्यक्रम भी प्रदान किया गया।

मैं यह दोहराना चाहूंगा कि संस्थान अनुसंधान एवं आयुर्विज्ञान शिक्षा में उच्च गुणवत्ता तथा मानकों के प्रति प्रतिबद्ध है। हमारे संकाय-सदस्यगण तथा वैज्ञानिक मानव जिनोमिक्स, अंग प्रतिरोपण कार्यक्रम सहित प्रतिरक्षा आनुवंशिकी, आण्विक चिकित्सा, संरचनात्मक जैव विज्ञान तथा प्रोटीन संरचना, नई दवाओं के विकास के लक्ष्यों जैसे क्षेत्रों में अग्रणी अनुसंधान में लगे हुए हैं। वे हृद् वक्ष तथा तंत्रिका विज्ञान में इमेजिंग विज्ञान के द्वारा नए निदानों एवं इंटरवेन्शन प्रक्रियाओं पर भी कार्य कर रहे हैं। फीटल मेडिसिन, नवजात विज्ञान तथा कैंसर में अल्ट्रासाउण्ड निर्देशित प्रक्रियाएं भी नैमिक रूप से काम में लाई जा रही हैं। कार्डियेक स्टेन्ट्स, कॉक्लियर इम्प्लांट्स, घुटने एवं कूल्हे के जोड़ों जैसे बायोकम्पेटिबल प्रतिरोपण यन्त्रों का प्रयोग करते हुए रोगी उपचार हेतु तकनीक आधारित नई नई प्रक्रियाएं, सहयोगी बायो डिजाइन के द्वारा नीति विषयक रूप से अनुमोदित पद्धतियों का प्रयोग करके बहुत अधिक प्रायोगिक एवं नैदानिक रूप से व्यवहार में लाई जा रही हैं।

भारत में बेहतर स्वास्थ्य उपचार प्रदान करने हेतु संस्थान में कैंसर सहित रोगों का निदान करने तथा जैव चिकित्सीय विषयों, विकृतिविज्ञान, प्रयोगशाला चिकित्सा, विषाणु विज्ञान, चिकित्सा अर्बुद विज्ञान तथा बाल चिकित्सा विज्ञान में अनुसंधान प्रारंभ करने के लिए कई प्लेटफार्म आधारित प्रौद्योगिकियों को परिनियोजित किया गया है।

हमारे संकाय सदस्यों द्वारा हृद् वक्ष शल्यचिकित्सा, तंत्रिका शल्यचिकित्सा, अस्थिरोग विज्ञान, कॉर्नियॉप्लास्टी एवं रेटिनल चिकित्सा, मधुमेह के क्षेत्रों में रोबोटिक तथा कम आक्रामक शल्यचिकित्सा द्वारा श्रेष्ठतम रोगी उपचार कार्य किया गया है। ट्रॉमा उपचार केन्द्र में कार्यरत डॉक्टरों द्वारा गंभीर तथा आपात उपचार चिकित्सा हेतु नैदानिक अनुसंधान संचालित किए गए हैं और एक सुरक्षित चिकित्सा प्रोटोकॉल एवं मार्गदर्शिका का विकास किया गया है तथा चिकित्सा की इस नवोदित शाखा में सफलतापूर्वक नेतृत्व प्रदान

किया है । छात्रों एवं रेजिडेंट डॉक्टरों के लाभ के लिए प्रायोगिक प्रयोगशालाओं में पशु प्रयोग तथा सर्जिकल परिस्थितियों में व्यावहारिक कौशल विकास सहित चिकित्सा शिक्षा हेतु मेडिकल अनुकरण प्रणाली के द्वारा नव कौशल अर्जन विधियों को प्रचालन में लाया जा रहा है। वे इन मेडिकल अनुकरणों द्वारा संवेदनाहरण तथा अभिघात उपचार विषय जैसे विभिन्न स्टेशनों पर नैमिक एवं गंभीर उपचार चिकित्सा ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।

हमारे पास बल्लभगढ़ स्थित सामुदायिक अस्पताल में ग्रामीण एवं जन-स्वास्थ्य व्यवसाय में स्नातक-पूर्व तथा स्नातकोत्तरों को प्रशिक्षण देने के लिए एक प्रभावशाली ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण कार्यक्रम भी है। वे इस सामुदायिक केन्द्र द्वारा नियंत्रित 28 गांवों में स्वास्थ्य एवं रोग जानपदिक रोग विज्ञान की शिक्षा भी प्राप्त कर चुके हैं।

पिछले शैक्षिक वर्ष के दौरान इस संस्थान के संकाय, वैज्ञानिकगण तथा विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं, लिखित पुस्तकों एवं मोनोग्रामों में 1800 से अधिक अनुसंधान लेख प्रकाशित हुए तथा उन्होंने काफी बड़े पैमाने पर पुस्तकों में अध्याय प्रकाशन में भी अपना योगदान दिया।

अनुसंधान फैलो, अनुसंधान एसोसिएट्स तथा पी-एच डी. छात्रों जैसे विभिन्न स्तरों पर कार्यरत 500 से ज्यादा युवा वैज्ञानिक हमारे संकाय वर्ग के मार्गदर्शन एवं निगरानी में महत्त्वपूर्ण अनुसंधान परियोजनाओं में संलग्न हैं।

वर्ष के दौरान कई अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे वि.स्वा.सं., एन.आई.एच., यूनिसेफ तथा अन्य भारतीय एजेंसियों द्वारा 55 परियोजनाओं सहित 508 अनुसंधान परियोजनाएं प्रगति पर हैं। हमारे संकाय वर्ग एवं वैज्ञानिकों को 69 करोड़ रू. की बाह्य निधियां प्राप्त हुई हैं। मैं अपने सहयोगियों को इस उपलब्धि के लिए बधाई देना चाहूँगा। इस वर्ष 211 अनुसंधान परियोजनाएँ सफलतापूर्वक पूर्ण की गईं जिनसे संस्थान में नई जानकारी एवं उपयोगी अनुसंधान आंकड़े प्राप्त हुए। हृद् रोग विज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, स्टेम सेल अध्ययन, औषधि निर्माण, प्रोटीन अनुसंधान, आनुवंशिकी एवं प्रतिरक्षा विज्ञान जैसे नए क्षेत्रों को सम्मिलित करते हुए 58 नई अनुसंधान परियोजनाओं के लिए युवा संकाय-वर्ग को 5 करोड़ रुपये की संस्थागत निधियां भी वितरित की गईं। यह अनुसंधान अनुभाग द्वारा एम्स में किया गया एक प्रशंसनीय प्रयास था। मेरी अध्यक्षता में, अनुसंधान सलाहकार परिषद द्वारा प्लेटफार्म आधारित तकनीक का प्रयोग करके अनुसंधान तकनीकों को सीखने के लिए युवा स्कॉलरों और संकाय-सदस्यों को प्रोत्साहित करने एवं हमारी अनुसंधान क्षमताओं को बढ़ाने के लिए कई उपाय किए गए हैं। आण्विक चिकित्सा के नवीनतम अनुसंधान क्षेत्रों में 58 युवा संकाय-सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

25 सितम्बर को संस्थान के स्थापना दिवस समारोह के दौरान संकाय-सदस्यों को पिछले वर्ष के दौरान उनके विशिष्ट अनुसंधान प्रकाशनों हेतु नकद पुरस्कार एवं विशिष्टता प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे। इन पुरस्कारों के लिए चयन प्रक्रिया पूर्ण हो गई हैं।

इस अवसर पर जनसाधारण हेतु स्वास्थ्य सेवाओं में संस्थान के योगदान को प्रदर्शित करने से संबंधित स्वास्थ्य प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जाएगा। यह एक प्रकार से पिछले 4 वर्षों के दौरान प्रारंभ की गई विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों का प्रतिबिम्ब है।

पिछले वर्ष से प्रारंभ 'संस्थान स्थापना दिवस व्याख्यान' भी एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक द्वारा दिया

जाएगा। यह व्याख्यान युवा चिकित्सकों एवं विद्यार्थियों के लिए अति प्रेरणात्मक अनुभव है।

वर्तमान में, एम्स अस्पताल में दंत चिकित्सा में दिवस उपचार के बिस्तरों सहित बिस्तरों की कुल संख्या 2445 हो गई है। गत वर्ष के दौरान, एम्स की ओ.पी.डी. एवं आपात् चिकित्सा विभाग में कुल 27,10,956 रोगियों का उपचार किया गया तथा 1,85,572 रोगी भर्ती किए गए एवं 1,47, 599 रोगियों का ऑपरेशन किया गया। संस्थान द्वारा रोगी उपचार सेवाओं में लगभग 84% बिस्तर अधिभोग दर तथा अस्पताल में भर्ती रहने की 6 दिन की अवधि दर के आदर्श पैमाने को बनाए रखा गया। एम्स अस्पताल में 7.8% की मिश्रित अपरिष्कृत संक्रमण दर सहित कुल 3% से भी कम मृत्यु दर रिपोर्ट दर्ज की गई।

हमारे संकाय-सदस्यों, स्कॉलरों तथा छात्रों के लिए अनुसंधान आरंभ करने हेतु कन्वर्जेंस ब्लॉक में नवीनतम प्रौद्योगिकी आधारित सभी आधुनिक प्लेटफॉर्म उपलब्ध होंगे। वास्तव में, यह एक ज्ञान केन्द्र (नॉलेज हब) होगा जिसमें हमें अनुसंधान में क्षमता को बढ़ाने के लिए हमारी व्यापक नैदानिक सामग्री एवं अनुसंधान आंकड़ों का संग्रह एवं प्रबंधन किया जाएगा। यह ब्लॉक तीन माह के अंदर पूर्ण हो जाना चाहिए।

हम सब जानते हैं कि संस्थान से लोगों को बड़ी आशाएं हैं। वास्तव में, हम देश में कम लागत पर विशिष्ट चिकित्सा उपचार प्रदान करने में कामयाब रहे हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि सामान्यत: आम जनता के रूप में लोगों, विशेष रूप से रोगियों ने हमारे ऊपर बहुत ही विश्वास किया है।

मैं, अपने सहयोगियों की ओर से, हमारे पास आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आश्वस्त करना चाहूंगा कि हम कभी भी अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हटेंगे। मैं, इस अवसर पर अपने सभी संकाय सदस्यों, डॉक्टरों, रेजीडेंट्स, नर्सों तथा अन्य सहयोगियों को जनता की सेवा हेतु अपना सहयोग देने व अपनी प्रतिबद्धता दिखाने के लिए हार्दिक धन्यवाद करता हूं। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हमने देश की संसद द्वारा दिए गए शासनादेश का पालन किया है। हमारे काम और प्रतिबद्धता को आम जनता द्वारा और साथ ही साथ राष्ट्र-नेताओं द्वारा उत्कृष्टतापूर्वक सराहा गया है। अत: इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि एम्स ने एक ब्रांड वैल्यू प्राप्त कर ली है जिसे भारत सरकार सहित राज्य सरकारों और विदेशी संस्थानों द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। केन्द्रीय सरकार द्वारा अभी हाल ही में विभिन्न राज्यों में एम्स जैसे 6 संस्थानों में एम.बी.बी.एस. का पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। हम केंद्रीकृत प्रवेश परीक्षा एवं काउंसलिंग प्रक्रिया द्वारा एम.बी.बी.एस. छात्रों के चयन सहित विभिन्न तरीकों से इन संस्थानों को परामर्श प्रदान कर रहे हैं। इस संदर्भ में, मैं अपने परीक्षा अनुभाग के सहयोगियों एवं संकाय सदस्यों को उनके सफल प्रयास हेतु धन्यवाद करता हूं।

हम संस्थान में वास्तविक शिक्षा प्राप्ति का माहौल स्थापित करके तथा संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के साथ सहयोग से इन संस्थानों का पालन पोषण एवं मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहे हैं।

जहां एम्स आयुर्विज्ञान शिक्षा, अनुसंधान तथा रोगी उपचार में श्रेष्ठता के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में जाना जाता है वहीं सरकार, मीडिया तथा जनसमूह द्वारा बारीकी से इसका अवलोकन एवं मानीटरिंग भी की जाती है। अत: हमें स्वास्थ्य उपचार के सभी पहलुओं में लगातार सुधार एवं विकास में लगे रहना है । हमें भारत एवं विदेशों के विश्वविद्यालयों के साथ सहयोगी प्रयासों के माध्यम से ट्रांसलेशनल चिकित्सा जैसे नवीनतम क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करना है।

यह सत्य है कि रोगियों को प्रदान की जा रही हमारी उत्तम उपचार चिकित्सा के कारण संस्थान में रोगियों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है जिस कारण हमें अपनी कुछ प्राथमिकताओं पर समझौता करने के लिए विवश होना पड़ा है जिसके परिणामस्वरूप संस्थान की शैक्षिक एवं अनुसंधान गतिविधियों पर प्रभाव पड़ा है। यह वास्तव में हमारे लिए बहुत बड़ी चुनौती है। हमें अपनी शैक्षिक विशिष्टता की सुरक्षा करनी है और इसके निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करना है। मुझे आशा है कि एक बार 6 एम्स जैसे संस्थानों एवं अन्य मेडिकल कॉलेजों के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा फंडिंग में वृद्धि करके उनकी सुविधाओं में वृद्धि किए जाने से हम वास्तव में विशिष्टता के सही मायने में परामर्शदायी स्वास्थ्य उपचार संस्थान (रेफरल हेल्थ इंस्टीट्यूट) के रूप में कार्य करने में सक्षम होंगे और प्रभावी रूप से अन्य संस्थानों की तरह उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान में अपना भरपूर योगदान दे सकेंगे।

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि हमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी- विशेष रूप से जैव आयुर्विज्ञान; के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम आविष्कारों के साथ गतिमान होना है और प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए हमारी जनता की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के लिए कम लागत वाला समाधान उपलब्ध कराना है। सरकार के सहयोग से एवं हमारे अध्यक्ष श्री गुलाम नबी आजाद जी के आदर्शवादी नेतृत्व के अंतर्गत संस्थान द्वारा वर्तमान परिसर में अपनी क्षमता बढ़ाने हेतु विस्तार कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। संक्रामक रोगों, मॉलेक्यूलर चिकित्सा, पोषण एवं पुनर्जनन विज्ञान जैसे क्षेत्रों में विशिष्टिता का एक विश्व स्तरीय केन्द्र विकसित करने हेतु योजनाएं बनाते समय रोगियों हेतु आऊटरीच ओ.पी.डी. सेवाएं प्रारंभ करने के लिए हमने हरियाणा के झज्जर परिसर में कार्य भी प्रारम्भ किया है। झज्जर में एक राष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान केन्द्र को भी इस स्थल पर स्थापित करने की योजना का कार्य अंतिम चरण में है।

भारत एक ज्ञान-विकास आधारित एवं प्रौद्योगिकी आधारित समाज बनने की ओर अग्रसर है। पूरा विश्व हमें देख रहा है। हमें अपनी भावी पीढ़ी के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनानी होगी। वास्तव में, गुणवत्ता एवं विकास की गति बनाए रखना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है जोकि भारत में स्वास्थ्य उपचार क्षेत्र हेतु एक विशाल एवं कुशल कार्यदल तैयार करने सहित आम जनता की बढ़ती स्वास्थ्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षमताओं में विस्तार भी अति महत्वपूर्ण है। हम तकनीकी एवं परा-चिकित्सा स्तरों पर कुशल स्वास्थ्य उपचार कर्मियों की अत्यधिक कमी महसूस कर रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम राष्ट्रीय कुशलता विकास परिषद तथा अन्य ऐसे संस्थानों सहित संस्थानों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों से इन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे।

इस खुशनुमा अवसर के लिए मैं संकाय-सदस्यों, स्टाफ, रेजीडेंट, डॉक्टरों, वैज्ञानिकों, नर्सों तथा छात्रों की ओर से तथा अपनी ओर से मैडम चान को बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। आज हम अपनी खुशियां एवं उत्सव आपके साथ मनाकर वास्तव में बहुत खुश हैं । पिछले पांच वर्षों के दौरान संस्थान के समग्र विकास के लिए अपना निरंतर सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए मैं एम्स अध्यक्ष एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद जी का बहुत ही आभारी हूँ।

अंत में, मैं आप सभी के लिए स्वस्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता हूँ।

इस अवसर पर पधारने के लिए मैं आप सभी का धन्यवाद करता हूँ।

जयहिंद

आचार्य रमेश सी. डेका
निदेशक/मुख्य कार्यकारी अधिकारी
एम्स, नई दिल्ली

नई दिल्ली
12 सितंम्बर, 2013

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान

अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029